पाठक मंच

'आह्वान' एक हथियार है

'आह्वान कैम्पस टाइम्स' एक पत्रिका न हो होकर एक हथियार है। आह्वान के पिछले अंक में मार्क ट्वेन की दोनों कहानियाँ बहुत ही अच्छी लगीं। आगे भी इस तरह के साहित्य का इन्तज़ार रहेगा। भगतसिंह की वैचारिक विरासत के बारे में लिखा गया लेख वाकई आँखें खोल देने वाला था। इस तरह के लेखों को पर्चों की शक्ल में अलग से भी वितरित किया जाना चाहिए। राधामोहन गोकुलजी का लेख पढ़कर ही यह समझ में आ गया कि वह अपने समय के मूर्तिभंजक रहे होंगे। लेकिन सबसे अच्छा लगा भ्रष्टाचार पर आया सम्पादकीय। वाकई यह भ्रष्टाचार के तमाम सुधारवादी दृष्टिकोणों की धज्जियाँ उड़ाकर एक सही क्रान्तिकारी दृष्टि देता है।

रवीन्द्र कुमार, करावलनगर,
दिल्ली

इस संघर्ष में आपके साथ हूँ..

मैंने आह्वान की सदस्यता अभी-अभी ली है। कृपया पत्रिका को नियमित रखने का प्रयास करें। आपकी पत्रिका आह्वान कैम्पस टाइम्स आम जनता, खासकर छात्रों-नौजवानों को जागरूक करने और संघर्ष के लिए प्रयत्नशील है। इस संघर्ष में मैं आपके साथ हूँ। मुख्य काम इस सड़ी-गली व्यवस्था को उखाड़ फेंकना है और एक नये समाज की स्थापना के लिए मेहनतकश जनता को एकजुट करना है ताकि संघर्ष के रास्ते पर चलकर एक नये समाज का निर्माण किया जा सके।

क्रान्तिकारी अभिवादन के साथ,
दीवान कुण्डल, (जम्मू कश्मीर)

'आह्वान' ऊर्जा देता है..

क्रान्ति के पर्याय, मानवीय मूल्यों को समर्पित, संघर्ष ही जीवन के यथार्थ के सत्य को उद्‌बोधित करती 'आह्वान कैम्पस टाइम्स' से अभिभूत हूँ। आज की व्यवस्था की मानव-विरोधी नृशंसता के तथ्यों का उद्‌घाटन, इस पत्रिका के माध्यम से सोचने की एक नयी दिशा प्रदान करता है। इसका हर अंक पाठकों को एक मूल्यबोधि संस्कार देकर मानव विरोधी शक्तियों के खिलाफ़ सोचने को अवश्य मजबूर करता है।

मैं सोचता हूँ कि आपके इस वैचारिक आन्दोलन में अपनी ऊर्जा लगा पाता।

'आज की कविताएँ' कुछ कारण विशेष से बन्द है, लेकिन पुनः प्रकाशन की योजना बना रहा हूँ।

कुछ कविताएँ भेज रहा हूँ। अगर उपयोग कर पायें तो खुशी होगी।

मंगल कामनाओं के साथ,
भवदीय,
गिरिजा शंकर मोदी
सम्पादक-आज की कविताएँ

विद्रोह

अन्याय के ख़िलाफ़
लड़ते लोगों को
सीखचों में बन्द कर
पहरा देते सिपाहियों का
सिर भी कभी
शर्म से झुक जाएगा,
वर्दी से लिपटी देह की आत्मा भी
कभी न कभी एक दिन
अपनों के लिए
तड़पेगी की अवश्य,
लूटी गई रोटी को
फेंककर खिलाने का अहसास भी
कभी न कभी उसे होगा ही,
और जब उसकी समझ
पाएगी
इतिहास के पन्नों से आज तक
दमघोंटू समाज की अन्धेरी कोठरी में
तड़प दम तोड़ते
नर कंकालों के बीच
खुद को भी,
तो वह खोल देगा
अपनी वर्दी
खोल देगा जेल के सींखचे
और शामिल हो उनके काफिले में
जो आदमी की बात करता है,
बुलन्द करने लग जाएगा आवाज़
आज़ादी की, न्याय की, जीने की
पता नहीं
वह और कब तक भोगता रहेगा
रोटी के बदले गोली देती
नर संहारक व्यवस्था को।

गिरिजा शंकर मोदी
सम्पादक-आज की कविताएँ
'शब्द सदन'
सिकन्दरपुर (बरविग्घि)
मिरजानहाट, भागलपुर-812005
(बिहार)

अब सोचने की बारी हमारी है...

जो खा रहा है, वह बादाम-पिस्ता खा रहा है
जो जा रहा है वह पिसता जा रहा है।
वह आम इंसान
जिसके बल पर दुनिया चल रही है।
दुनिया उसे छल रही है।
जिसके मज़बूत कन्धों पर
दुनिया का बोझ टिका हुआ है।
वह चन्द स्वार्थी मुनाफ़ाखोरों के आगे झुका हुआ है।
और उसे दुनिया का बोझ बताया जा रहा है
दोस्तो, अब बारी है
सोचने की हमारी
फिर
क्यों न हम
एक ऐसे समाज के बारे में सोचें
जिसमें सभी काम करें
और सभी को मिले जीने का बराबर अधिकार।

वन्दना, सेक्टर-16, रोहिणी,
दिल्ली

"तुम नए महासागरों की खोज तब तब नहीं कर सकते जब तक तुममें किनारे को नज़रों से ओझल करने का साहस नहीं हो।"

— *अज्ञात*